ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 37 बुलेटिन अवधिः 13–17 मई, 2017 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 12 मई, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभ्चाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	13–05–2017	14–05–2017	15–05–2017	16–05–2017	17–05–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	26	26	27	27	27
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	12	11	12	13
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	75	75	75	75	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	30	30	30	30	30
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	04	08	10	06	08
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (5 से **11 मई** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान साफ रहने के साथ आंशिक बादल छाये रहे व 1.1 मि0मी0 वर्षा हुई तथा अधिकतम तापमान 24.2 से 28.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 10.8 से 15.6 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य शीघ्र पूर्ण करें।
- बसन्त ऋतु में यदि गन्ने में चौडी पत्तियो वाले खरपतवार की बहुलता हो तो 2,4 डी0 सोडियम साल्ट का 0.75 से 1किग्रा0 सक्रिय घटक प्रति हेक्टेयर की दर से 750 ली0 पानी में घोल बनाकर 1 हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़काव करे। यदि कृषि श्रमिक उपलब्ध हो तो गन्ने के खेत में गुड़ाई कर एक हफ्ते तक छोड़कर तत्पश्चात सिंचाई करे। पर्याप्त नमी होने पर नाइट्रोजन का यूरिया के रूप में छिड़काव करे।
- इस समय खाली खेत में गहरी जुताई कर क्षेत्र की मेढ़ बन्दी करे जिससे पानी को संरक्षित किया जा सके।

उद्यान प्रबन्धः

❖ ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रो में मधुमक्खियो के छत्तो को सेब के बगीचो में रखें जो कि परागण की क्रिया सम्पन्न करने के लिए लाभकारी होगी।
❖ अगर सेब के बगीचो मे नत्रजन की दूसरी मात्रा नहीं डाली गयी है तो CAN के रूप में प्रयोग करें।
❖ मध्यम तथा ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रो में नमी की उपलबधता बनाये रखने हेतु सिचाई अथवा पलवार का प्रयोग करे।
❖ सूर्य की तीव्र या तेज किरणो से फल पेड़ो के तने पर बचाव के लिए पेड़ के तनो पर नीला थोता मिश्रित चूने का (नीला थोता 1 किग्रा, चूना 30 किग्रा, आधा लीटर अलसी का तेल 100 ली0 पानी में मिलाकर) प्रयोग करे।
❖ सूक्ष्म पोषक तत्वो जैसे जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत एवं यूरिया 10 प्रतिशत घोल का छिड़काव पत्तियो पर करें।
❖ नर्सरी पौधो में मूलवृन्त से निकली शाखाओ व टहनियो को बराबर निकालते रहे।
❖ फ्रासबीन एवं लोबिया में पत्ते सिकुड़ने की दशा में किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।
❖ यदि प्याज व लहसुन की फसल तैयार हो गयी है तथा इनकी पत्तिया जमीन की सतह पर गिरनी प्रारंभ हो गई हों तो फसल में सिंचाई करना बंद करें तथा आने वाले 15–20 दिनों में फसल की खुदाई करें।
❖ पर्वतीय क्षेत्रों में यदि टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च की पौध का प्रतिरोपण 1 माह पूर्व हो गया हो तो यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें साथ ही साथ नमी संरक्षण के उपाय सुनिश्चित करें।
❖ मध्यम ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में तैयार मटर की फसल की तुड़ाई करे।
❖ ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रों में आलू की फसल में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग के पश्चात् मिट्टी चढ़ायें तथा नमी संरक्षण हेतु कार्बनिक पलवार पदार्थ का प्रयोग करें। ध्यान रहे पलवार पदार्थ की मोटाई कम से कम 8–10 से0मी0 हो।
❖ मध्यम पर्वतीय क्षेत्रों में यदि राई, बंदगोभी, फूलगोभी या मूली की बीज वाली खड़ी फसल है तो ओले से बचाव हेतु नाइलोन जाली का प्रयोग करें।
❖ कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0 / ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
❖ भिण्डी की फसल में पत्तियों की नसे यदि पीली पड़ रही हो तो ऐसे पौधो को निकालकर नष्ट कर दे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण के लिए किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें।
❖ मिर्च एवं टमाटर की उपरी पत्तियो पर बारीक चितकबरे धब्बे दिखाई देने पर सर्वांगी कीटनाशी का 10 से 15 दिन के अन्तराल पर नियमित छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ गर्मी के मौसम में पशुशाला के आसपास की नालियो में मेलाथियॉन अथवा अन्य कीटनाशक दवाइयो8 का छिड़काव समय समय पर कराते रहे।
❖ विदेशी गायें अधिक गर्मी सहन नही कर पाती जिससे उनके आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी आ जाती है। और उनका उत्पादन प्रभावित होता है। अतः विदेशी गायो का उत्पादन बनाये रखने तथा बीमारियो से बचाव हेतु गौशाला के अन्दर तापमान नियंत्रण हेतू शीतल यंत्र जैसे पंखा, कूलर अथवा आधुनिकतम शीतल यंत्र की व्यवस्था करे।
❖ अगर पशु लू के प्रकोप का शिकार हो जाए तो पास के पशु चिकित्सक से मिलकर उसका तुरन्त उपचार करायें।
❖ पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।
❖ गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें।
❖ अप्रैल माह से भैंसों को पशुशाला में सुबह 9 बजे से शाम 6 बजे तक रखना चाहिए, जिससे उन्हें तेज धूप से बचाया जा सके।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर